IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

काव्य और उसका वैशिष्ट्य

डॉ संदीप कुमार शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
स्वर्ण जयंती महाविद्यालय,
पिपराइच, गोरखपुर।

"शरविन्दु सुन्दर रुचिश्चेतमि सा मे गिरां देवी ।

अपहत्य तमः संततमर्थानखिलान्प्रकाशयतु ॥"

लोकोत्तर प्रतिभा – सम्पन्न विदग्य एवं वर्णनिपूर्ण जीवनानुभूति प्राप्त रससिध्द विशिष्ट व्यक्ति –

"कविमनीषी परिभूः स्यमंभूः" की रससिक्त भावाभिव्यक्ति को काव्य कहते है। काव्य प्रयोजन को प्रमाणित बनाने के लिए अर्थात विश्वनाथ ने अग्नि पुराण के कथन को उद्धृत किया है –

"नरत्वं दुर्लभं लोके विद्यातंत्र सुदुर्लभा ।

कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥"

काव्य की उपयोगिता के विषय में पुराण में भी कहा गया है – इस लोक में मानव जन्म दुर्लभ है। इस मानव जन्म में विद्या दुर्लभ है। विद्या के प्राप्त होने पर कवित्व दुर्लभ है। थोड़ा–बहुत कविता कर लेने पर काव्यसृजन शक्ति अत्यंत दुर्लभ है। कवि की समता प्रजापति के साथ की जाती है। जिस प्रकार प्रजापति अपनी इच्छा के अनुसार इस विशाल तथा विविध पदार्थान्वित जगत की सृष्टि करता है। उसी प्रकार कवि भी अपने इच्छानुसार नवीन काव्यो की सृष्टि करता है। जो मनुष्यो के हृदय में आनन्द ही उत्पन्न नहीं करता प्रयुक्त उनके जीवन को भी उदार तथा उदान्त बनाता है। ब्राही सृष्टि की अपेक्षा कवि की सृष्टि में निजी विशेषता है अत्यंत विलक्षणता है। ब्रह्मा अपने सृष्टिकार्य में एकांत स्वतंत्रता का अनुभव नहीं करते, बल्कि वह प्राणियों के क्रमानुसार ही सृष्टि रचना में प्रवृत्त होता है परंतु, कभी अपनी सृष्टि में नितांत स्वतंत्र होता है उसकी रूचि जैसी होती है वैसी ही सृष्टि वह संघः कर लेता है।

"अपारे काव्य–संसार कविरेकः प्रजापतिः।

यथास्मै रोचने विश्वं ताथेदं परिवर्तने ॥" (ध्वन्या पृ० 422)

आचार्य मम्मट ने ब्रह्मा की सृष्टि से कवि की सृष्टि की विशेषता का बड़ा ही औचित्यपूर्ण उल्लेख किया है–

"नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमनीमनन्यपरतन्त्राम्।

नवरसरुचिरां निर्मितिमादयती भारती कवेर्जयति ॥" (काव्य प्रकाश 1/1)

काव्य से चारो पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है इस विषय में विश्वनाथ कविराज का प्रसिद्ध मत इस प्रकार है। –

"चतुर्वर्गफल–प्राप्तिः सुखादल्पथियामपि।

काव्यादेव यतस्तेन तत्वरूपरूपं निरुत्यते ॥" (विश्वनाथ साहित्यदर्पण)

काव्य एक ऐसी वस्तु है। जिससे अल्प वृद्धि मानव को भी सुख पूर्वक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति होती है। काव्य इस प्रकार उपदेश देता है कि "राम के समान आचरण करो, रावण के समान आचरण मत करो।" काव्य का यह उपदेश कृत्य (कर्तव्य कार्य) के प्रति हमारी प्रवृति एवं अकृत्य के प्रति निवृर्ती का कारण है।

सामान्य रूप से कवि के कर्म को काव्य कहते है। संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने काव्य का बहिरंग और अंतरंग लक्षण प्रस्तुत किया है। बहिरंग लक्षण में काव्य के अवयवो उसके अंगो के संघटन का वर्णन किया जाता है। अन्तरंग में काव्यगत विशेषता दिखाई जाती है। जो काम में ही प्राप्त होता है। अन्यत्र नहीं आचार्य मम्मट कृत काव्य लक्षण बहिरंग है और विश्वनाथ तथा जगन्नाथ का काव्य लक्षण अन्तरंग है। आचार्य मम्मट का काव्य लक्षण निम्नवत है – **"तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि"** (मम्मट काव्यप्रकाश)

अर्थात दोषरहित गुण से मंडित और कहीं–2 अलंकार रहित अथवा अस्फुट अलंकार वाले शब्द और अर्थ काव्य कहे जाते हैं।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार वह वाक्य जिसकी आत्मा रस है काव्य कहलाता है –
"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" (साहित्य वर्णन – विश्वनाथ)

पंडितराज जगन्नाथ का प्रख्यात काव्य लक्षण है – "रमणीयार्थप्रतिपादक शब्द काव्य" अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपादक शब्द काव्य होता है। काव्य के शब्द तथा शरीर होते हैं। काव्य में शब्दों के द्वारा प्रतिपादित अर्थ ऐसा हो जिसमें चित्रण रमण करें, आनंद उठावे /रमणीयता का पर्यायवाची शब्द है–चमत्कार /चमत्कार शब्द का प्रयोग

व्यापक अर्थ में करने पर हम कह सकते हैं कि रमणीय रचना हृदय को प्रभावित कर उसमें अलौकिक आनन्द का संचार करती है वह 'काव्य' कहलाती है।

"सरसालङ्कृतादुष्ट–शब्दार्थ काव्यमेव तत्।

विलक्षणंचमत्कार बीजं पधादि भेदतः ॥"

अर्थात रस तथा अलंकार संयुक्त, दोषरहित शब्द और अर्थ युक्त कवि की रचना को 'काव्य' कहते है और वह पथ गद्यादी भेद से युक्त होकर विलक्षण चमत्कार जनक होता है।

काव्य कोरी कवि कल्पना नहीं है उसकी रचना का कुछ न कुछ निश्चित प्रयोजन भी है। काव्य एक कर्तव्य–कर्म है और उसका उद्देश्य मानव जीवन की पूर्णता भी है–

"दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम।

विश्रामजननं लोके नाट्यभेतद भविष्यति ॥"

ब्रह्मा जी का कथन है कि मेरे द्वारा रचा हुआ यह नाटक दुख से पीड़ित थके मादे शोक–संतृप्त बेचारे लोगों के लिए उचित समय पर विश्राम देने वाला होगा।

काव्य के तीन मुख्य भेद होते है (1) उत्तम या ध्वनि (2) मध्यम या गुणीभूत–व्यंग्य (3) अधम या चित्रकाव्य। काव्यगत मुख्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्रधानता होने पर उत्तम, व्यंग्यार्थ की गौणता होने पर अधम ओर व्यंग्यार्थहीनता की स्थिति में अधम काव्य होता है।

इन्द्रियों की ग्राहकता के आधार पर काव्य के दो प्रकार किए गये हैं– दृश्यकाव्य और श्रव्यकाव्य। जिसका आनन्द हम देखकर ही उठा सकते हैं, उसे दृश्यकाव्य कहते है। –श्यकाव्य के अन्तर्गत रूपक एवं उनके भेदोपभेद आते है। जिस काव्य को हम कानों से सुनकर आनन्द उठाते है, उसे श्रव्य काव्य कहते है। श्रव्यकाव्य के अन्तर्गत खण्डकाव्य, मुक्तक एवं गद्यकाव्य के अन्य भेद आते हैं।

वास्तव में सत्यं शिवं और सुन्दरं तीनां की सामंजस्यपूर्ण प्रतिष्ठा ही साहित्य की सफलता की पराकाष्ठा है। सत्यं उसकी आधारभूमि है, शिव उसका लक्ष्य और सुन्दरं उस लक्ष्य तक पहुँचने का साधन। शहितेन सह सहित'–कहकर साहित्य शब्द के व्याख्याकारों ने उसमें कल्याण–भावना की प्रतिष्ठा की है। केवल यथार्थ का चित्रण ही नहीं बल्कि आदर्श की कामना भी जीवन को कल्याण मार्ग की ओर ले जाने में समर्थ हो सकती है। प्रत्यक्ष का चित्रण यदि साहित्य में स्वाभाविकता और संवेदना उत्पन्न करता है तो अप्रत्यक्ष का संकेत उसमें उन्नति–पथ के पथ–प्रदर्शक का कार्य करता है।

इतना ही नहीं अपितु, साहित्य, संगीत और कला विहीन को साक्षात् पशु कहा गया है– **"साहित्य संगीतकला विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।"**

मानव जीवन में आचार और विचार का महत्वपूर्ण स्थान है। आचार व्यावहारिक पक्ष है और विचार सैद्धान्तिक। हमारा मन और संकल्प शिवात्मक होना चाहिए। मनुष्य में निहित गुण–सम्पदा आकस्मिक, आधुनिक, मनुष्य में नहीं अपितु सनातन है। इन्हीं मानव–मूल्यों को गीता में दैवी–संपदा कहा गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. साहित्य दर्पण 01/01
2. " " 1/02
3. " " 0 पृष्ठ 4
4. पृष्ठ – 18
5. पृष्ठ – 22
6. पृष्ठ – 22
7. पृष्ठ – 70
8. काव्य प्रकाश
9. संगीतरत्नाकर 1.21
10. " 1.26